



समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। आप चलें या न चलें, समय तो चलता ही रहता है। यदि आप समय का सदुपयोग करेंगे, तो निश्चय ही आपके व्यक्तित्व का विकास होगा। यदि आप समय को नष्ट करेंगे, तो समय आपको नष्ट कर देगा। जिसने समय का मोल पहचाना, वह आगे बढ़ गया मगर जिसने समय के महत्व को नकारा उसने अपने ही हाथों अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मार ली।

समय निष्पक्ष रूप से 'सबको' समान अवसर देता है। यह मानव मात्र पर निर्भर है कि वह उपलब्ध समय के कितने भाग का सदुपयोग करता है। यह संसार प्रलोभनों की एक प्रदर्शनी है। भांति-भांति के आकर्षण हमें अपनी ओर खींचते हैं।

सवाल इस बात का है कि हम अपना समय किस प्रकार बिताना चाहते हैं? प्रत्येक बालक निश्चय ही एक स्वप्न देखता है। एक कामना करता है, बड़ा होकर कुछ बनने की, कुछ कर गुज़रने की, किन्तु बहुत कम व्यक्तियों के स्वप्न साकार हो पाते हैं। प्रायः लोग अपनी असफलता को भाग्य का नाम देते हैं, किन्तु क्या उनके ऐसा करने से वास्तविक सन्तोष की प्राप्ति हो पाती है? क्या कभी हमने यह नहीं सोचा है कि यदि हमने थोड़ा और प्रयास किया होता, तो शायद हमको भी हमारा लक्ष्य प्राप्त हो गया होता। क्या कभी हम यह सोचने पर विवश नहीं हुए हैं कि यदि हमने अमुक व्यसनो में अपना समय नष्ट नहीं किया होता, तो सम्भवतः आज स्थिति कुछ और होती! यही अनुभूति हमारे जीवन में परिवर्तन ला सकती है। हम इस पर गम्भीरता से विचार करें कि यदि हम किसी लक्ष्य विशेष को प्राप्त नहीं कर सके, तो इसका यह अर्थ तो नहीं कि सारे अवसर समाप्त हो गये या अब जीवन में कुछ शेष ही नहीं रहा। सम्भव है, जो लक्ष्य हमने चुना था, हमारी परिस्थितियाँ उसके उपयुक्त न रही

समय का मोल पहचानिये!

हों। यह भी सम्भव है कि हमने लक्ष्य तो चुन लिया, किन्तु उसकी प्राप्ति हेतु आवश्यक प्रयास ही नहीं किये हों अथवा हमारे समक्ष ऐसी बाधाएँ आती रही हों, जिन पर विजय प्राप्त करने के बदले हम स्वयं उनके द्वारा विजित होते गये हों। इस सम्बन्ध में विस्तृत व्याख्या करके हम अपनी असफलता का कारण जान सकते हैं।

सर्वप्रथम हमें अपनी दुर्बलताओं और शक्तियों को पहचानना होगा। चूँकि समय सीमित है, अतः आइये, हम इन्हें आज ही पहचानें और अपने भावी जीवन का लक्ष्य निर्धारित करें। परन्तु ध्यान रहे कि कोई भी कार्य सिर्फ कामना करने से पूरा नहीं होता,

इसके लिये क्रिया करना आवश्यक है।

यह भी याद रहे कि अंधेरे में बाण चलाते रहने से लक्ष्य भेदन सम्भवतः

कभी न हो सके। वह क्रिया जो वांछित फल न प्रदान करे, वह क्रिया नहीं परन्तु क्रीड़ा है, जो हमें भ्रमित करती है। अतः क्रियाओं का स्वरूप निर्धारण, दिशा निर्धारण तथा समय निर्धारण नितान्त आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है। यदि हम अपने जीवन का समुचित लक्ष्य निर्धारण नहीं करेंगे तथा उसकी प्राप्ति हेतु आवश्यक क्रियाएँ नहीं करेंगे, तो वह सब कुछ जो आज हमें सुन्दर, सरस, सुहाना एवं आकर्षक लगता है, कल हमें काटने दौड़ेगा और तब समय हमारे हाथ से निकल चुका होगा। फिर हमारे पास हाथ मलते रहने के सिवाय कोई भी विकल्प नहीं बचेगा। अतः समय का मोल पहचानिये और समय रहते समय के सदुपयोग में जुट जाइये। शायद, इसीलिये हमारे एक संत कवि ने भी कहा है कि 'काल करे सो आज कर, आज करे सो अब। क्षण में परलय होत है, बहुिर करेगो कब?' **सुरेश वी. कुलकर्णी** 301, रॉयल एवेन्यू, न्यू पलासिया, इन्दौर

बहुत से लोग रेलवे को रेलवाइ कहते हैं। इसका एक कारण तो मेरी समझ में यह आता है कि हम हिन्दुस्तानी लोग मधुमेह की हद तक मिठाई खाते हैं और रेलवाइ, हलवाइ से बहुत मिलता-जुलता है। दरअसल, हलवे वाले कालांतर में हलवाइ हो गये व रेलवे वाले रेलवाइ कहलाये जाने लगे। जब हम उम्र में छोटे थे, तो स्कूल में एक निबन्ध रेलवे से सम्बन्धित ज़रूर रटाया जाता था। कक्षा के अनुसार शीर्षक बदल जाता था। जैसे-रेलवे स्टेशन, प्लेटफॉर्म का दृश्य, भारत में रेलवे, एकता का प्रतीक रेलवे, अर्थव्यवस्था में रेलवे का योगदान आदि-आदि। इनमें सबसे लोकप्रिय या कहे पिटा-पिटाया विषय था 'मेरी प्रथम रेल यात्रा'। तब चूँकि वातानुकूलित श्रेणियाँ नहीं थीं, अतः आपसे अपेक्षा इस प्रथम यात्रा में यह की जाती थी कि आप अनारक्षित थर्ड क्लास डिब्बे में यात्रा करें। आगे का वर्णन टिकट खरीदने के संघर्ष और जहोजहद से लेकर विकट भीड़भाड़, दमघोट वातावरण से होता था।

इन दिनों इतनी सारी रेल दुर्घटनाओं को देखकर मुझे लगता है कि रेलवे न केवल आवागमन का साधन है, बल्कि अब इन्होंने यात्रियों को जीवन के आवागमन चक्र से मुक्ति दिलाने का गुरुतर भार भी अपने सिर ले लिया है। पीछे विज्ञान के आम आदमी को नींद की गोलियाँ, रसोई गैस और किरोसिन सुलभ करा देने से आत्महत्या करने वालों में रेल की लोकप्रियता बहुत घटी है। सिने तारिका हो या रेलगाड़ी, अपनी लोकप्रियता घटना किसे नहीं अखरता? अतः अब रेल की छत पर यात्रा करने वालों के लिए बिजली के तारों का विशेष प्रबन्ध भी किया गया है तथा स्टीम इंजन को तिलांजलि दे दी गई है। ऐसी चीज होने से क्या फायदा जो समय के साथ न चल सके। रेलवे जितने लोगों को यात्रा कराती है, उससे कहीं अधिक को आश्रय देती है। यकीन नहीं आता तो हमारे प्लेटफॉर्मों, वेटिंग रूमों, पटरियों से सटे घरों और रिटायरिंग रूमों को देखें। समतावादी समाज की स्थापना में सबसे बड़ा योगदान भारतीय रेलवे का है। हर मजहब, हर तबके का आदमी रेल से जुड़ा है। किसी भी सैकण्ड क्लास जनरल कम्पार्टमेंट में यात्रा करेंगे, तो आपको यकीन आ जायेगा कि भिखारी हो या जेबकतरा, टिकटधारी हो या बेटिकट, रेलवे किसी से भी भेदभाव नहीं करती। अपनी पर आए तो टी.टी. बेटिकट व्यक्ति को पूरी बर्थ पर 'स्टाफ' कह कर सुला सकता है व टिकटधारी को पायदान पर लटका सकता है। चाहे तो वह नीचे उतार भी सकता है। कई बार मन में ख्याल आता है कि रेलवे ने टी.टी. के कोट का रंग 'काला' ही क्यों चुना? कोई तो बात होगी। खेर जाने दीजिये। वैसे काले कपड़े में एक सफ़त है कि मैला हो भी जाये तो दिखता नहीं। टी.सी.की नज़दीक की नज़र अक्सर कमजोर होती है। इसलिये प्लेटफॉर्म पर वे हमेशा यात्रियों से घिरे रहते हैं। बिल्कुल उसी भाव से जैसे गोपियाँ उद्धव को घेर लेती थीं और पंजों के बल उचक-उचक कर पूछती थीं कि श्री कृष्ण ने पाती में उनका नाम भी लिखा है कि नहीं? उद्धव बने टी.सी. चार्ट में से नाम पढ़ते जाते हैं। नाम सुन यात्री हर्षिते हैं या नाम न पा कर निराश हो उठते हैं तथा कुछ और जुगाड़ लगाते हैं। देश की आज़ादी में रेलें जन आंदोलन का साधन रही हैं। शहर-शहर अलख जगाने का

काम नेताओं ने रेल की खिड़की/दरवाज़ों से ही लिया है। देश आज़ाद होने के बाद रेलें जन आन्दोलन के साधन से जन आन्दोलन का निशाना बन गईं। फिश प्लेट उखाड़ना, बम रखना, जाम लगाना आदि-आदि। अप और डाउन ट्रेनें रेलवे कैसे बनाती है, पता नहीं, पर जनता तो यही जानती-समझती है कि जो भरकर जाये वो अप ट्रेन और जो खाली-खाली जाये वो डाउन ट्रेन। एक टी.सी. ने रिटायरमेंट के बाद घर बनवाया। घर क्या पूरी कोठी थी। अब कोठियाँ कोई क्वार्टर तो नहीं, कि उनके ब्लॉक और नम्बर आदि हों। इसलिये उनके नाम रखे जाते हैं यथा विजय निवास, लाल कोठी, सात बंगला। कुछ साहित्यिक रुझान के लोग नशेमन, आशा, विश्रान्ति आदि नाम भी रख लेते हैं। इससे अलग पहचान बनती है व 'एक्सक्लूज़िव' बने रहने के अहं का पोषण होता है। हाँ, तो जिन टी.सी. की मैं बात कर रहा था, उन्होंने अपनी नवनिर्मित आलीशान कोठी का नाम रखा 'यात्री कृपा'। इससे अधिक सटीक नाम मैंने कोई नहीं देखा सिवाय व्हाइट हाउस के। भगवान न करे आपको कभी थाने जाना पड़े। अगर आप जायें तो वहाँ एक अपराध चार्ट टंगा होता है। इस चार्ट की यह खूबी रहती है कि इसके आँकड़े कम हो या ज्यादा, जाते पुलिस के ही 'फेवर' में हैं। जैसे कम हों तो पुलिस कहती है हमारी मुसैदी से कम हो गये। ज्यादा हों तो कहेंगे हमने ग़रत बढ़ा दी है, पिछले वाले तो पकड़ते ही नहीं थे। हमने अपराध और अपराधी दोनों का सफाया कर दिया है। इसी तर्ज़ पर जब रेल की

नई लाइन पड़ती है, तो नेताजी गाँव वालों को बताते हैं कि कैसे उनका इस गाँव को यह सुविधा देने का सपना साकार हो गया। अगले गाँव में जहाँ लाइन नहीं बिछी थी, लोगों ने टोका तो बोले मैंने खुद मना कर दिया। हमारे गरीब किसान के खेतों में से लाइन जायेगी, तो फसल नष्ट हो जायेगी। गाय-भैंसों के दूध सूख जायेगा। देखते नहीं, न मक्खन मिल

रहा है न पनीर। लोगों को अन्न नहीं मिल रहा है। मजबूरन उन्हें 'फास्ट फूड' से गुज़ारा करना पड़ रहा है। रेल जिस क्षेत्र से गुज़रती है बहुत कुछ सुविधा वहाँ के वासियों के लिए उपलब्ध कराती है। पटरी के आसपास के घरों में रेल की बर्थ के सोफे, गहिराँ आदि मिल ही जायेंगे। सीटों की पैकिंग झोले आदि बनाने के काम में आती है। इसके अलावा कॉलेज के छात्रों में नेतागिरी, गुण्डागर्दी की 'ट्रेनिंग' का केन्द्र भी रेलवे ही उपलब्ध कराती है। इलाके के जेबकतरों, भिखारियों व उठाईगिरों के लिए कार्यक्षेत्र भी रेल प्रदान करती है। रेल पिया मिलन कराती है, तो प्रिया को मैके लाने ले जाने का काम भी करती है। सरकार हर साल दो चीज़ों के दाम बजट में ज़रूर बढ़ाती है। सिगरेट और रेल किराया। दोनों धुआँ छोड़ती हैं। यह सरकार का हमें संदेश है कि इस दुनिया में सब कुछ धुआँ है। यह दुनिया फानी है। तुझे कोई और नहीं, मुझे कोई ठौर नहीं। बेचारा यात्री फिर भी रेल में ही 'सफर' करता है। वो दिन दूर नहीं जब रेल यात्रा इतनी महंगी हो जायेगी कि आम लोग फिर इक्के, तांगे से काफिलों में चला करेंगे। इससे बचत है जान-माल की। इसकी बात न भी करें तो ईंधन तो बचता ही है। पैसे और विश्व पर्यावरण भी बचता है।

रवीन्द्र कुमार,

मुख्य कार्मिक अधिकारी, (प्रशासन), मध्य रेल, मुंबई सी. एस. टी.

व्यंग्य-वीथिका

रेलवाइ

